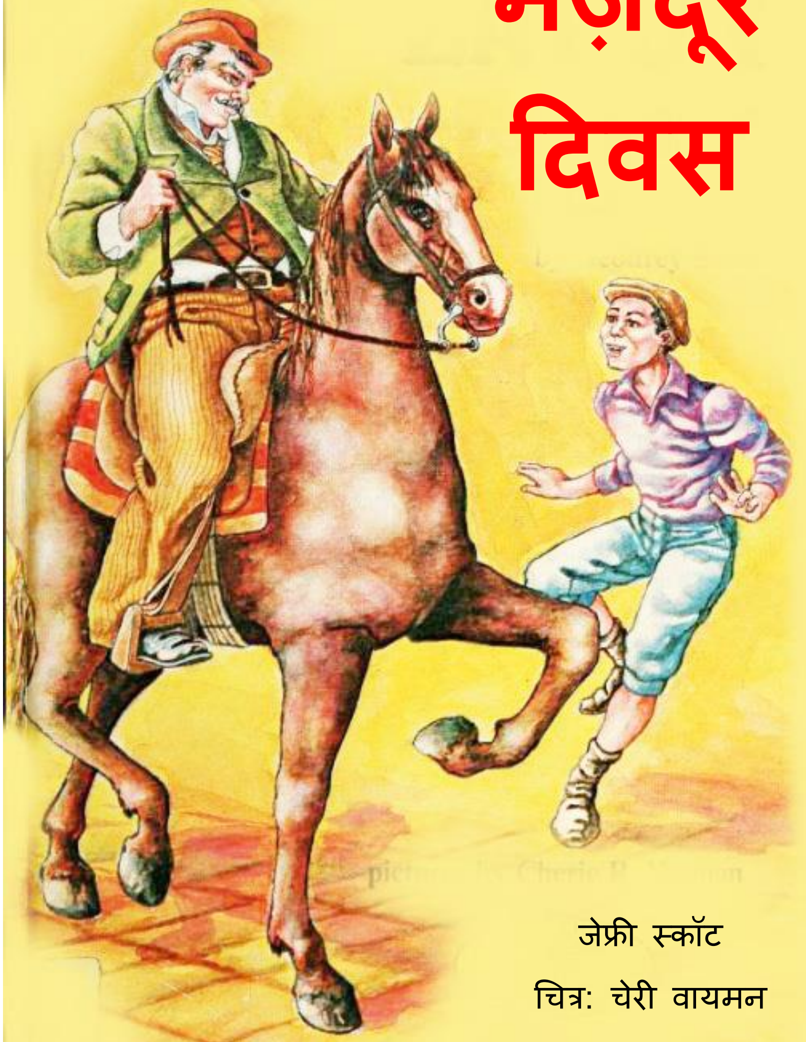
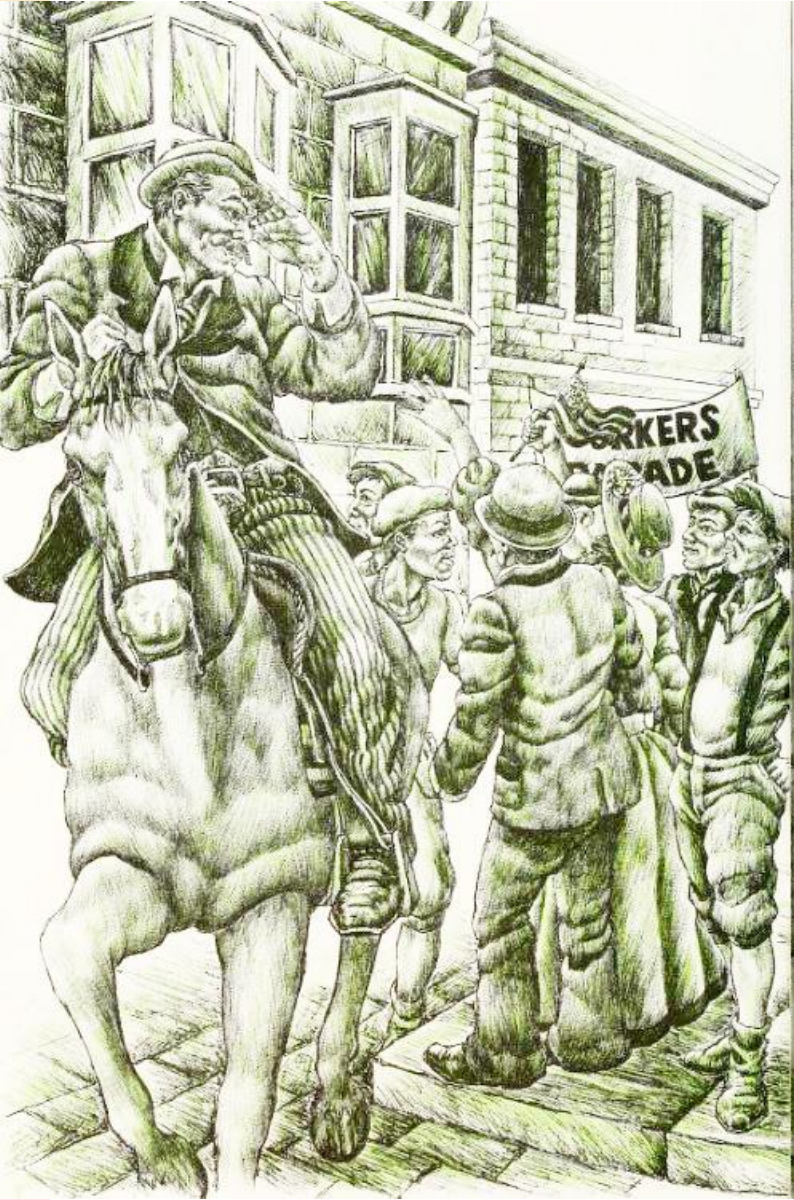
मज़दूर दिवस



जेफ्री स्कॉट

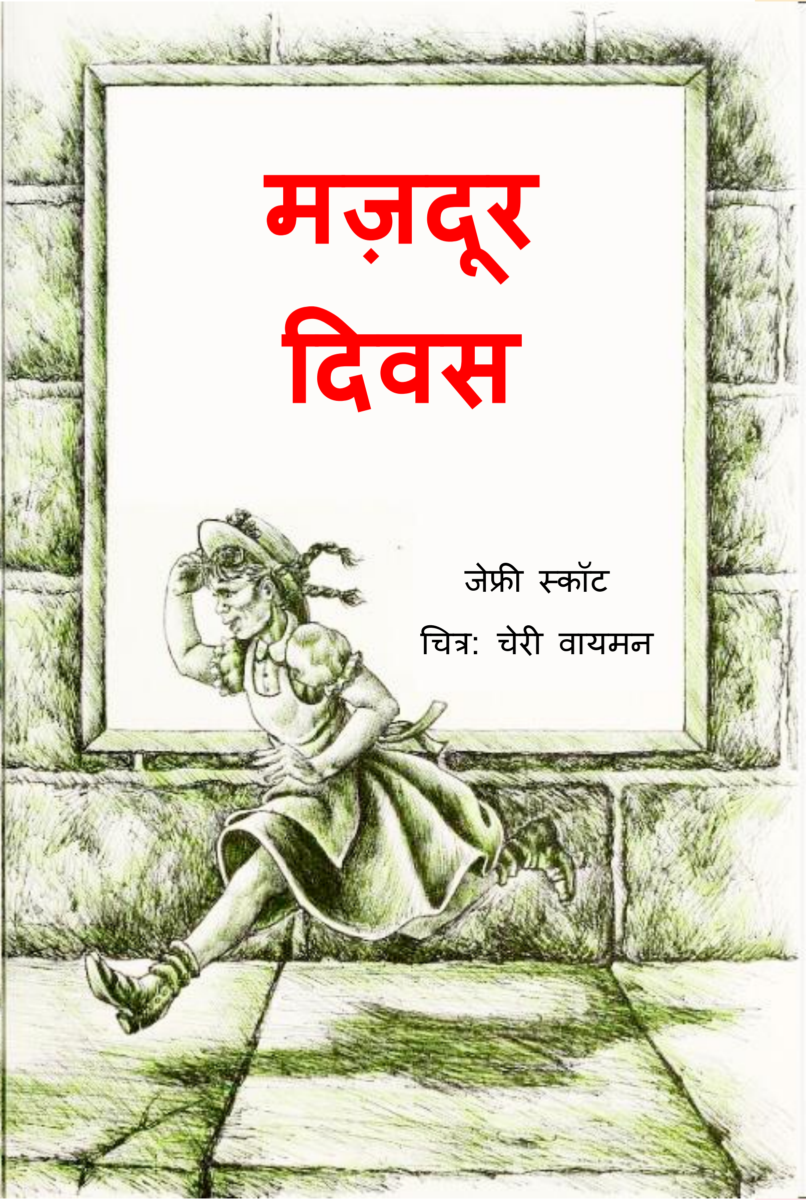
चित्र: चेरी वायमन



मज़दूर दिवस

जेफ्री स्कॉट

चित्र: चेरी वायमन





हर साल सितंबर के पहले सोमवार को हम मजदूर दिवस मनाते हैं.

मजदूर दिवस गर्मियों के अंत का प्रतीक है. यह उत्सव पूरे अमेरिका में मनाया जाता है

लेकिन इसे मजदूर दिवस क्यों कहा जाता है?

मजदूर दिवस मनाकर हम वास्तव में क्या मनाते हैं?

हमारे पास हमेशा से मजदूर दिवस नहीं था.

यह कोई बहुत पुरानी छुट्टी नहीं है.

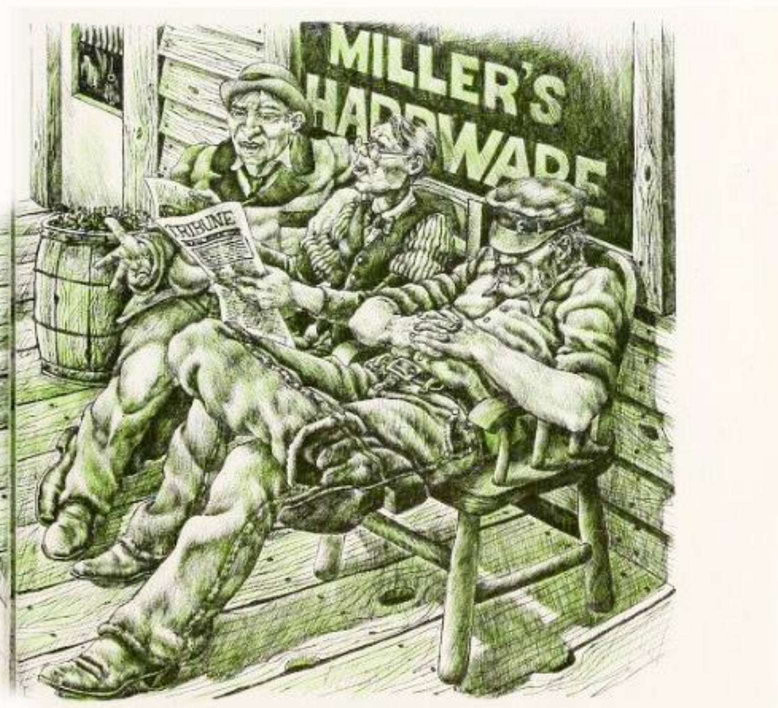
पहला मजदूर दिवस लगभग 100 साल पहले ही आयोजित किया गया था.

तब इसे मजदूर दिवस नहीं कहा जाता था.

उसे पूरे देश में भी नहीं मनाया जाता था.

वो केवल न्यूयॉर्क शहर में ही मनाया जाता था.





श्रम का अर्थ होता है काम या मजदूरी.

1882 में न्यूयॉर्क शहर में कई तरह के मजदूर रहते थे.



बढ़ई



राज-मिस्त्री



फर्नीचर बनाने वाले

प्रिंटर



उनमें से ज्यादातर अपना काम पसंद करते थे.

उन्हें अपने कौशल और उनके द्वारा बनाई गई चीजों पर गर्व था.

लेकिन बहुत सी बातें ऐसी थीं जो उन्हें पसंद नहीं थीं.

उस समय ज़्यादातर मज़दूरों को लंबे समय तक काम करना पड़ता था.

मज़दूर दिन में 12 या 14 घंटे काम करते थे!

और उन्हें सप्ताह के अंत में छुट्टी भी नहीं मिलती थी.

वे छह दिन काम करते थे और कभी-कभी हफ्ते में सातों दिन काम करते थे!

अक्सर वे ऐसी जगहों पर काम करते थे जो सुरक्षित नहीं थीं.

अगर आज आप सप्ताह में 6 दिन, दिन में 12 घंटे काम करते, किसी खतरनाक जगह पर काम करते, तो आपको बहुत सारा पैसा मिलता.

लेकिन 1882 में ऐसा नहीं था.

तब मज़दूरों को बहुत कम पैसा मिलता था.

उन्हें इतना कम वेतन मिलता था कि कई परिवारों को, अपने बच्चों को भी काम करने के लिए भेजना पड़ता था.

इसलिए तब 11 या 12 वर्ष के कई बच्चे काम करते थे.



बच्चे कारखाने में दिन में दस घंटे, कपड़े के भारी रोल उठाते थे.

या वे सप्ताह में छह दिन कोयले की खुदाई करते थे.



कोई भी मज़दूर इन हालातों से खुश नहीं था.

लेकिन एक अकेला मज़दूर भला उन्हें कैसे बदल सकता था?

फिर 1880 के दशक में, न्यूयॉर्क के मज़दूर संगठित होने लगे.

मज़दूर, शिल्प संगठन नाम के समूह बनाने लगे.

शायद अगर कई लोग एक साथ संगठित हों तो फिर वो उस परिस्थिति को बदल पाएं जिसे कोई एक व्यक्ति नहीं बदल सकता था.

उस समय प्रत्येक शिल्प का अपना संघ था.

राज-मिस्त्रियों का अपना संघ था.

बढ़ईयों का अपना संगठन था.

फिर उनमें से कई छोटी यूनियनें एक-साथ जुड़ीं और उन्होंने एक बड़ा संघठन बनाया जिसका नाम सेंट्रल लेबर यूनियन या सी.एल.यू. था.

सी.एल.यू. एक उससे भी बड़े समूह का हिस्सा था.





इस बड़े समूह का नाम था "नाइट्स ऑफ़ लेबर".

"नाइट्स ऑफ़ लेबर" पुराने शूरवीरों की तरह लड़ते थे लेकिन वे तलवारों से नहीं लड़ते थे.

"नाइट्स ऑफ़ लेबर“ शब्दों और वोटों से लड़ते थे.

वे अपने बच्चों को कारखानों और खदानों से बाहर निकालने के लिए लड़ते थे.

वे बेहतर वेतन के लिए लड़ाई लड़ते थे.

उन्होंने कार्यस्थलों को अधिक सुरक्षित बनाने लिए लड़ाई लड़ी.



न्यूयॉर्क में काम करने वाले कई मज़दूर अमेरिका में पैदा नहीं हुए थे.

वे या उनके माता-पिता, अन्य देशों से आए थे.

अपने पुराने देशों में, मज़दूरों की विशेष छुट्टियां होती थीं.

प्रत्येक शिल्प का अपना एक विशेष दिन होता था,

बढ़ईयों का अपना दिन था,

ईंट बनाने वालों का अपना,

प्रिंटर मजदूरों का अपना दिन था.

विशेष छुट्टी वाले दिन उस शिल्प के मज़दूरों को छुट्टी मिलती थी.

फिर वे पिकनिक पर जाते थे.

यह दिखाने के लिए कि उन्हें अपने काम पर कितना गर्व था, वे परेडों का आयोजन करते थे.







लेकिन अमरीका में मज़दूरों को कोई छुट्टी नहीं थी.

न्यूयॉर्क शहर में कई मज़दूरों को अपने पुराने देशों की याद आती थी.

और वे अपने नए देश में भी मजदूरों के लिए छुट्टी चाहते थे.

उन्होंने सेंट्रल लेबर यूनियन को अपने विचार बताए.

14 मई, 1882 को न्यूयॉर्क शहर में सी.एल.यू. ने एक "विशाल मज़दूर उत्सव" आयोजित करने का निर्णय लिया.

उत्सव, सितंबर की शुरुआत में रखा गया था.

तब मौसम गर्म होता और उससे चौथी जुलाई और थैंक्सगिविंग के बीच छुट्टी भी होती.

तब परेड और पिकनिक दोनों आयोजित हो सकती थीं.

तब सभी को अच्छा लगता.

तब वे लोगों को दिखा सकते थे कि उन्हें अपने काम पर कितना गर्व था.

वे दिखा सकते थे कि अपने काम करने की परिस्थितियों को लेकर उनमें कितना गुस्सा था.

किसी को पक्का पता नहीं था कि उस उत्सव का विचार किसके दिमाग की उपज थी.

कुछ लोगों के अनुसार वो विचार न्यूयॉर्क शहर के एक बढ़ई - पीटर जे. मैकगायर का था.



दूसरों का कहना था कि वो मैथ्यू मैकगुइरे था, जो न्यू जर्सी में एक मशीनिस्ट थे.

हम इतना ज़रूर जानते हैं कि उन दोनों ने त्योहार के दौरान कड़ी मेहनत की थी.





महोत्सव की योजना बनाई गई.

पिकनिक के लिए एक पार्क भी मिला.

संघ को पुलिस से परेड आयोजित करने की अनुमति मिली.

अंत में सोमवार, 5 सितंबर, 1882 त्योहार की तारीख निर्धारित की गई.

11 जून, 1882 तक, सी.एल.यू. ने त्योहार के लिए 20,000 निमंत्रण भेजे थे.

तैयारी पूरी थी.

बस एक ही सवाल था :

क्या कोई आएगा?



अमेरिका में ऐसा दिन पहले कभी नहीं मनाया गया था.

क्या लोग कुछ नया करने की कोशिश से डरेंगे?

क्या उन्हें अपनी नौकरी खोने का डर होगा?

जुलाई बीत गया, फिर अगस्त भी, पर फिर भी कई शिल्प संघों ने यह नहीं बताया था कि वे आएंगे या नहीं?

त्योहार सफल होगा या असफल?

उसका किसी को पता नहीं था.

अंत में 5 सितंबर का दिन आया.

सुबह के 10:30 बजे थे और मज़दूर परेड शुरू करने के लिए लाइन में लगे थे.

परेड के लीडर यानि ग्रैंड मार्शल - विलियम मैककेबे थे.

वो सीएलयू के नेता थे.

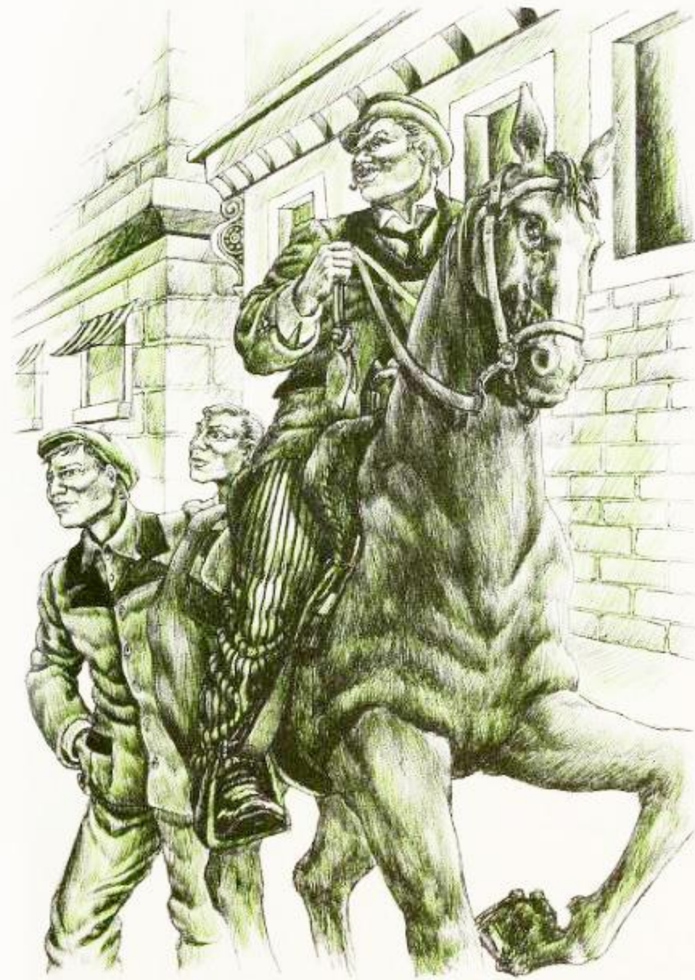
वो एक अच्छे घोड़े पर सवारी कर रहे थे.

वो परेड का नेतृत्व करने वाले थे.

लेकिन जब मैककेबे ने मार्च करने वालों की तरफ देखा, तो उनका दिल डूब गया.

क्योंकि सिर्फ कुछ गिने-चुने मज़दूर ही, मार्च में शामिल हुए थे.





मैककेबे ने फिर भी परेड शुरू की.

लेकिन उन्हें मज़दूर उत्सव एक बड़ा फ्लॉप लग रहा था.

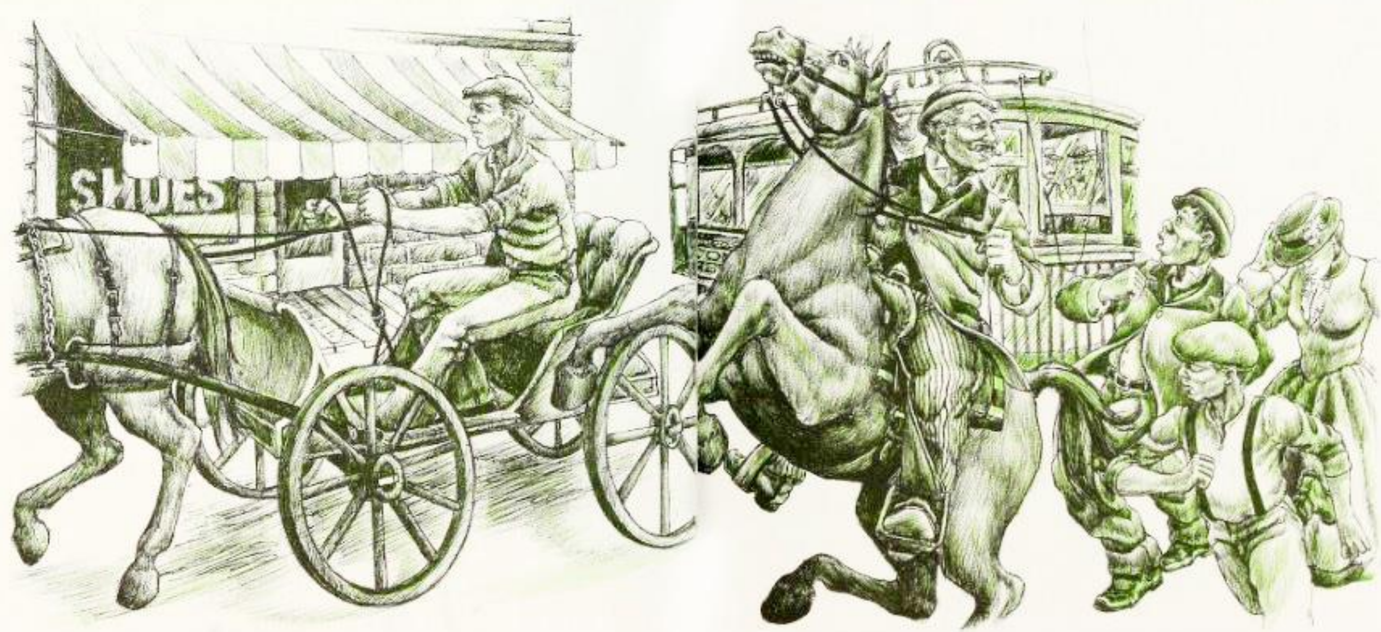
आमतौर पर परेड के लिए ट्रैफिक रुक जाता था.

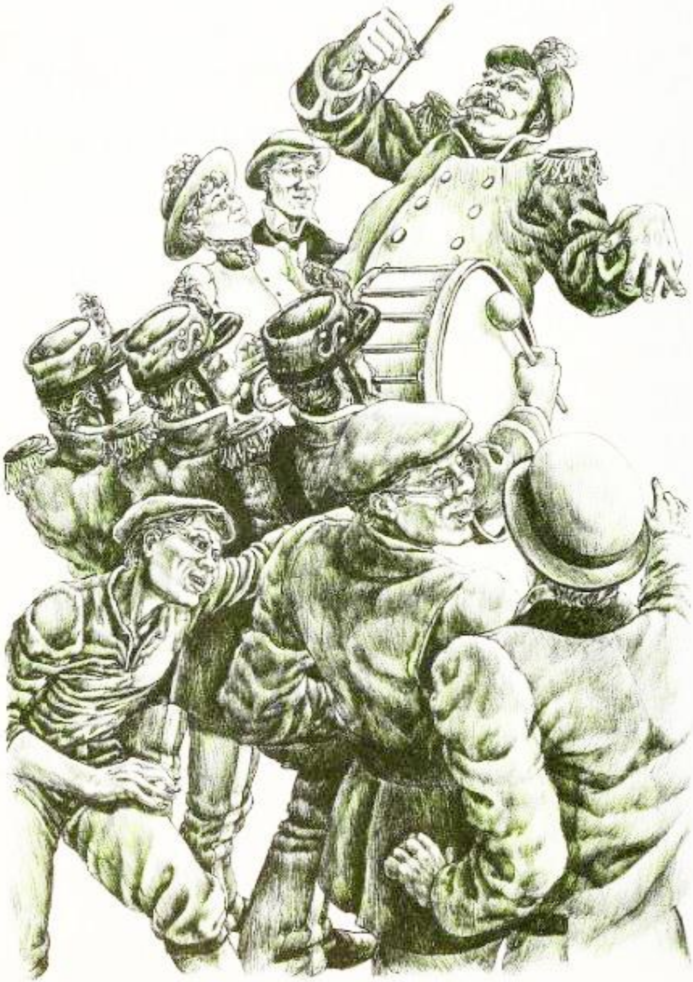
लेकिन उस दिन मजदूरों की परेड बहुत ही छोटी थी.

उस दिन परेड के लिए कोई यातायात नहीं रुका.

उल्टे, मार्च करने वालों को बसों और गाड़ियों से बचने के लिए इधर-उधर भागना पड़ा.

मैककेबे को उस छोटी परेड को एक साथ रखने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ी.







अचानक मार्च करने वाले मज़दूरों को संगीत सुनाई पड़ा जो बगल वाली गली से आ रहा था.

धीरे-धीरे संगीत की गूँज और तेज़ होती गई.

वो कौन हो सकता था?

वे ज्वैलरी बनाने वाले मज़दूर थे - पूरे 200!

और वे लोग परेड में शामिल होने आए थे.

और वे साथ में अपना ब्रास-बैंड भी लाए थे.

उनके ज़ोरदार संगीत ने सबका उत्साह बढ़ाया.

कुछ ब्लॉक के बाद, ईंट बनाने वाले मज़दूर भी परेड में शामिल हो गए.

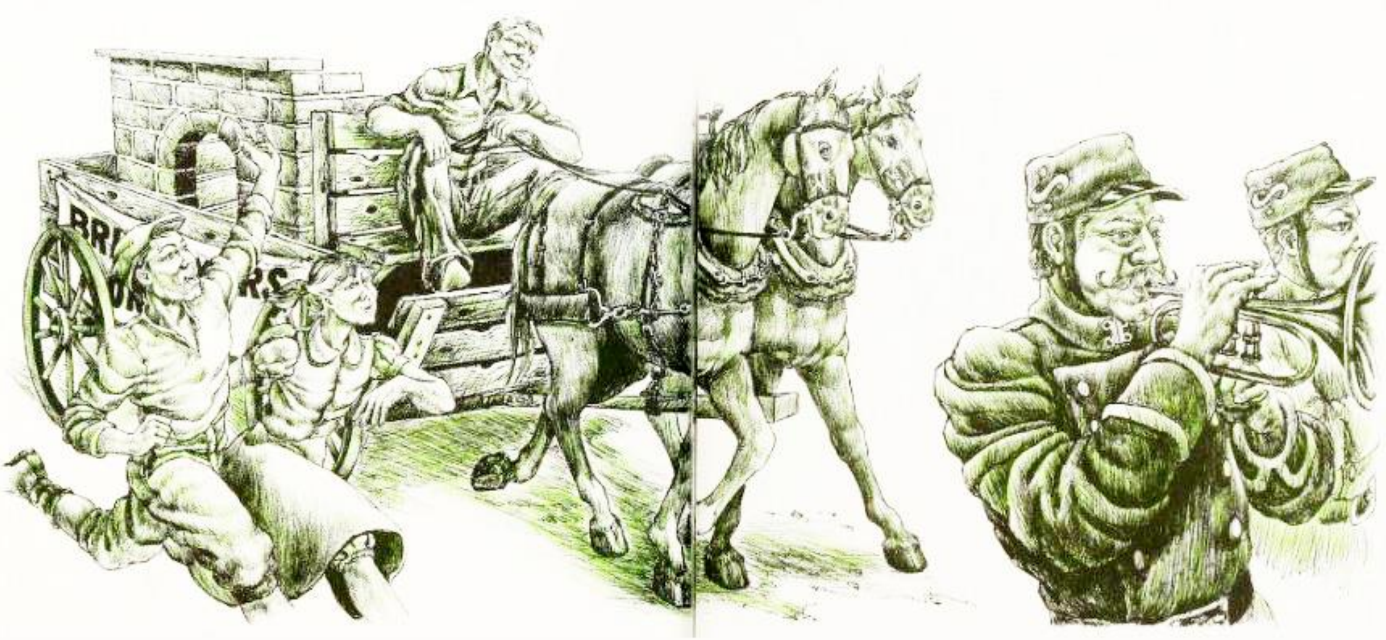
उनके पास भी एक ब्रास-बैंड था.

बैंड के बाद कुछ घोड़ों द्वारा खींचे गए वैगन आए.

वैगनों में ईंट की सीढ़ियों, दीवारों और खिड़कियों की झांकी थीं.

राज-मिस्त्रियों को अपने काम पर गर्व था.

वे अपनी कारीगिरी, अपने हाथ का कौशल सभी को दिखाना चाहते थे.



जल्द ही और मज़दूर भी परेड में आकर मिले.

जैसे-जैसे परेड आगे बढ़ी कई अन्य समूहों और संगठन भी उसमें शामिल हुए.

कुछ मज़दूर संगठनों को आने में देर भी हुई.

धीरे-धीरे परेड बड़ी-और-बड़ी होती गई.

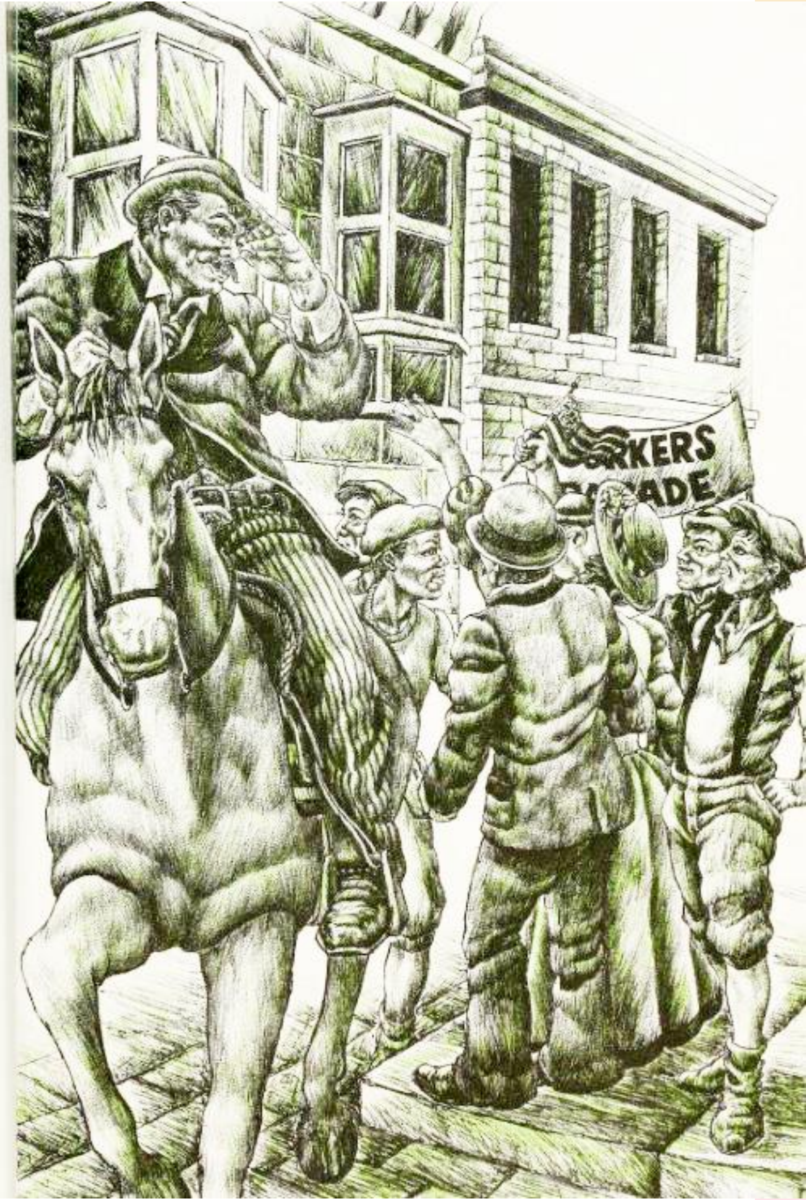
ग्रैंड मार्शल मैककेबे अब 10,000 मार्च करने वाले मज़दूरों का नेतृत्व कर रहे थे!

कई बैंड, जोर-शोर से बज रहे थे.

पूरा ट्रैफिक ठप्प हो गया था.

हजारों-लाखों की संख्या में लोग परेड देख रहे थे.

लोग लगातार तालियां बजा रहे थे और हवा में अपने रूमाल लहरा रहे थे.





कई मजदूर, काम पर पहनने वाले कपड़े पहने थे.

मशीनिस्ट अपने एप्रन पहने थे.

बढ़ई अपनी विशेष बेल्ट पहने थे जिसमें उनके औज़ार सजे थे.

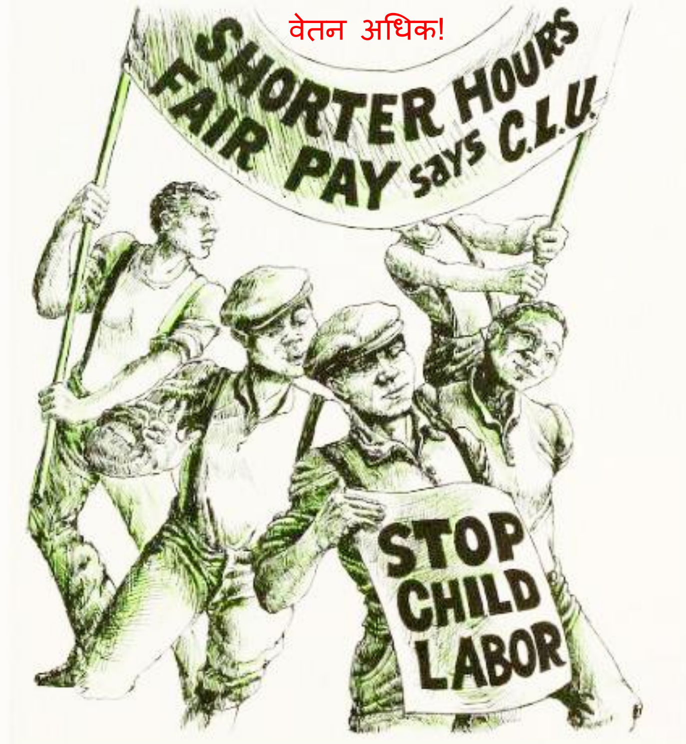
प्रिंटिंग प्रेस में काम करने वाले मज़दूर कागज़ की टोपियाँ पहने थे.

उनमें से कई के हाथ में झंडे और बैनर थे.

बैनर्स पर साफ़-साफ़ लिखा था कि मज़दूर क्या-क्या बदलाव चाहते थे.

घंटे कम!

वेतन अधिक!



बाल-मजदूरी बंद करो!

परेड के बाद, मार्च करने वाले मज़दूर अपने-अपने परिवारों के साथ मिलकर एल्म पार्क गए.

लगभग 50,000 लोगों से पार्क पूरी तरह भर गया.

सभी अपने-अपने पिकनिक लंच लेकर आए थे.

वक्ताओं ने अपने भाषणों में श्रम और मज़दूरों के महत्त्व के बारे में बातें की.

उन्होंने मज़दूरों की यूनियनों को कैसे संगठित किया जाए, उसके बारे में भी चर्चा की.

उन्होंने बाल श्रम को समाप्त करने के बारे में अपने सुझाव दिए.

भाषणों के बाद बैंड बजा.

लोगों ने गीत गाये. लोग ख़ुशी से नाचे.

आतिशबाजियां चलीं.

वो उस भव्य उत्सव को समाप्त करने का एक शानदार तरीका था!



1882 में वो पहला मजदूर दिवस, कुछ धीरे ही शुरू हुआ था.

उस दिन मज़दूर नेताओं को चिंता थी कि शायद परेड में बहुत कम लोग ही शामिल होंगे.



लेकिन दिन ढलने के बाद उन्हें पता चला कि परेड बहुत सफल हुई थी.

पर एक बात थी जो उन्हें नहीं पता थी.

उन्होंने राष्ट्रीय अवकाश शुरू किया था!

पूरे अमेरिका के मज़दूरों को, श्रमिकों के लिए एक दिन की छुट्टी का विचार बहुत पसंद आया.

इसलिए वो विचार बहुत तेजी से फैला.

1889 तक, 400 शहरों में न्यूयॉर्क शहर की तरह मज़दूर दिवस मनाए जा रहे थे.

कई राज्यों ने मजदूर दिवस कानून पारित किए.

ओरेगन उसमें से पहला राज्य था.

कोलोराडो, न्यू जर्सी, न्यूयॉर्क और मैसाचुसेट्स ने जल्द ही अपने-अपने मजदूर दिवस शुरू किये.

1930 के दशक तक, अमरीका के हर राज्य में मजदूर दिवस मनाया जा रहा था.





जैसे-जैसे मजदूर दिवस फैला, वैसे-वैसे मज़दूर अपनी कई समस्याओं का समाधान कर पाए.

बाल-मज़दूरी के खिलाफ कानून पारित किया गया.

दिन में काम के घंटों को घटाया गया.

मज़दूर सही थे.

यूनियनों में एक-साथ संगठित होने के बाद ही वे उन चीजों को बदलने में सक्षम हुए जिन्हें कोई अकेला मज़दूर कभी नहीं बदल सकता था.



मज़दूरों को आज नई-नई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है.

कारखाने पहले की तुलना में, अब अधिक सुरक्षित हैं.

लेकिन नई-नई मशीनें, सुरक्षा की नई-नई समस्याएं खड़ी कर रही हैं.

इसलिए मज़दूर यूनियनें भी कड़ी मेहनत कर रही हैं, जिससे वो अपने सदस्यों को कारखानों में सुरक्षित रख सकें.

मज़दूर यूनियन यह सुनिश्चित करती हैं कि उनके सदस्यों को अच्छा वेतन मिले.

मज़दूर संघ अपने सदस्यों की कई तरह से मदद करते हैं.



हम अमेरिकी मज़दूरों का सम्मान करने के लिए मजदूर दिवस मनाते हैं.

हम मानते हैं कि मज़दूरों की मेहनत ने ही हमारे देश को मजबूत बनाया है.

और हम यह भी याद रखते हैं कि सभी मज़दूर महत्वपूर्ण होते हैं, और उससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे क्या काम करते हैं.



अंत

